# ब्रह्माकुमारी संस्थान के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा

—स्वामी माधवाचार्य

मुझे उस व्यक्ति के व्यक्तित्व के प्रति बहुत आकर्ड्ढण ही नहीं श्रद्धा भी होती है जो संकटो में से गुजरता हुआ मंजिल तय कर लेता है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविधालय के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा दादा लेखराज कुछ ऐसे ही महापुरूड्ढ थे जिन्होने साधारण परिवार में जन्म लिया, साधारण शिक्षा— दीक्षा होते हुए भी परिस्थितियों से उत्साहपूर्वक लड़कर एवं संघर्ड्ढमय परिस्थितियों में परमात्मा तक अपने को विकसित कर लेना सचमुच में अपने आपमें एक चमत्कार है।

ज्ञान की गंगा बह रही है, हर किसी के ऊपर से। सन्तरा, नीबू, केला, आम आदि मनुष्य के उपयोग में आते ही अपनी कहानी स्वाद और स्वास्थ्य के रूप में कहना चुरु कर देते हैं। उन्मुक्त होकर अपने सम्पूर्ण गुण— धर्म बताकर परे हट जाते हैं। मोर, कोयल, कौवा, कबूतर सब बता रहे हैं, देखो आवाज कौनसी मनभावन है, पर हमारा अंहकार पास से गुजरती हुई ज्ञान गंगा में गोते लगाने नहीं देता और इसलिए हमारा अधूरापन हमारे अन्दर से फूटकर हमें ही दुख देने लगता है।

बबा ने अपने सम्पर्क में आने वाली हर वस्तु, हर व्यक्ति से शिक्षा ग्रहण की। यही कारण है कि वे अच्छाइयों से भरकर हर किसी के लिए आदर्श बन गए और गल्ले के व्यापार से चुरु करके हीरे—मोती के व्यापारी होकर बेशुमार दौलत के मालिक बने।

दौलत बहुत नशीली वस्तु है, न मिलने पर मनुष्य हीनता से भर जाता है और मिलने पर जीवन के सही मार्ग से भटक जाता है। धनवानो की हर रोज गाड़ियॉ और बिल्डिगें पुरानी हो जाती हैं। भोग से जन्मा रोग उनके जीवन में पश्चाताप के अतिरिक्त और कुछ नहीं छोड़ता। वे बहुत भाग्यशाली लोग हैं जो तन को प्रभु की प्राप्ति का साधन बना लेते हैं। परमात्मा को प्राप्त करके धन्य— धन्य बनते हैं। ब्रह्मा बाबा कुछ ऐसे ही कुछ गिने चुने लोगों में से थे जिन्होंने धन से दार्शनिकों, सन्तों की गोष्ठियां, संत समागमों का आयोजन किया। उन्होने धन के नशे को सिर पर नहीं, पैरों तले दबाकर रखा।

''भरत हि होहिन, राजमद, विधि हीरहर पद पाय'' एक बार बाबा ने फिर सच करके बता दिया कि ऐसा होना संभव है। आजकल लोग संतों के विचारों को फैशन, मनोरंजन तथा कोरे बुद्धिवाद के रूप में लेते हैं। उन्हें विश्वास नहीं होता कि इस धरती पर ईश्वरीय जीवन संभव भी है। पर बाबा बहुत हिम्मती और धर्मशाली थे जो संतों के विचारों के श्रोत खोज लेना चाहते थे। इसके लिए वे निरन्तर साधनारत बने रहे और अन्त में इस हीरे के व्यापारी ने उस अमूल्य हीरे को प्राप्त कर लिया, जिसके प्रकाश में सृष्टि सारी धवल हो जाती हैं और संसार की सारी महान्ताएं जिनके प्रकाश में निस्तेज हो जाती हैं, जिसके प्रकाश में अपने ही अन्दर से धन्यता और कृत— कृत्यता का संगीत निरन्तर बनजे लगता है। वे शिव बाबा के साथ मिलकर शिव स्वरूप हो गए परन्तु अभिव्यक्ति के लिए उन्होने अद्वैत में द्वैत को स्वीकार करके जगत कल्याण का गुरुत्तम् कार्य करने का संकल्प कर लिया।

परमात्मा कब और कैसे मिलता है इसे भक्त और भगवान ही जानता है। यही कारण है कि धरती पर द्वैत, अद्वैत, विशिष्ट द्वैत की अनेकों चाखाएं देखी जा सकती हैं। किसी को सर्वशाक्तिवान, सच्चिदानन्द, दिव्य ज्योति, बिन्दू स्वरूप, शिव परमात्मा मिले, तो परमात्मा के लिए कोई अनहोनी घटना नहीं है, प्रभु छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा होने की दोनों कलाओं में निपुण हैं। इसलिए श्रुति कहती है—''अण्गेड जी यान महतो महीयान''।यही कारण है कि धरती पर ब्रह्म बाबा को निमित्त बनाकर ज्ञान की सत् चित् बिन्दू शिखा का अवतरण हो गया।

नारी समाज सत्य को सरलता से स्वीकार कर लेता है। बाबा ने उसके इस गुण को स्वीकार करके नारी समाज का चयन किया और अपनी अनुभूति को नारियों के अन्तर में निवेश करके संसार से विमुक्त करके उन्हे लोक कल्याण में नियुक्त कर दिया, जिसका सुपरिणाम जन—

जन अनुभव कर रहा है। हिन्दुस्तान में दम्भी पुरुङ्कों के बीच रहकर नारियों को धर्माचारियों के रूप में प्रतिष्ठित करना बड़ी निर्भयता, बड़ी सहिष्णुता और आलोचना से परे महापुरुङ्कों का ही काम हो सकता है। हम लोग तो इसकी कल्पना मात्र से ही सिहर उठते हैं।

सन्त और सम्राट, राष्ट्र और समाज रूपी रथ के दो पहिए हैं। 90 प्रतिशत समाज को संत अपने विचार और चरित्र से प्रभावित रखता है और 10 प्रतिशत समाज को राजा अपनी दंड चक्ति का भय दिखाकर 'सर्व जन हिताय सर्व जन सुखाय' के पथ पर चिर काल से मानव चलाता रहा है। परन्तु प्रजातंत्र के युग में संतों का समन्वय टूट गया है, एक प्रकार की होड़ सत्ता के लिए चल पड़ी है। इस युग में नये संत समाज की जरूरत थी जो सत्ता के साथ समन्वय स्थापित कर सके। सौभाग्य की बात है कि उस कमी की पूर्ति प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय करने लगा है। यही कारण है कि सत्ता के सर्वोच्च शिखर पर बैठे विशिष्ट लोग भी इस विश्वविद्यालय के कार्यों को अपना कार्यक्रम बताकर बखान करते हैं।

कहीं ऐसा न हो कि एक दिन विश्व की सरकारें एकमात्र इन देवियों को ही आदर्श सन्त के रूप में घोङ्कित कर दें। इस संस्थान की आने वाली पीढ़ी की योग्यता उज्जवल भविश्य की है। कुछ देवियॉ तो टेलीविजन, रेडियो आदि प्रचार के सभी साधनों का उपयोग करने लगी हैं और लोगों के मुख से हमने उनकी बहुत प्रशंसा भी सुनी है। अन्त में हमारी परमात्मा से प्रार्थना है कि इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय को पथभ्रष्ट विभ्रान्त समाज को सत्पथ पर लाने की चक्ति दे जिससे मानव समाज विज्ञान के चमत्कारों को प्राणी मात्र के कल्याण में नियोजित कर इस धरती को कल्याणकारी स्वर्ग बना सके।

मानस मंदिर, सन्यास रोड,
कनखल, हरिद्वार

# राजयोग से स्थायी चान्ति प्राप्त की जा सकती है

—ध्रुवनारायण अग्रवाल

न्यूनतम अवधि में बल्कि कहा जाए रातो– रात भौतिक सुख– सुविधा की अधिकतम् प्राप्ति के लिए भागमभागा की इस ज़िन्दगी मे बढ़ते तनाव, कुण्ठा, वितृढणा, विक्षोप, अशान्ति जैसी मानसिक विसंगतियों को दूर करना या उनसे बचने के लिए कोई ठौर ठिकाना ढूंढ लेना आज के मनुष्य की उत्कृष्ट इच्छा है। यही कारण है कि भगवत चिन्तन, अध्यात्म मनन तथा चान्ति के लिए कुछ पल निकाल लेने को मन व्यग्र हो जता है। जहॉ कहीं भी मनुष्य को मंदिर की पवित्रता मिलती है, चंचल मन वहीं रम जाता है। यही कारण है कि भारत की कुछ आध्यात्मिक संस्थाएं जिनमें प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय प्रमुख है, देश–विदेश में काफी लोकप्रिय हो रहा है।

कोलाहल से भरी इस दुनिया में जहॉ मनोकामनाएं हिलोरे ले रही हैं, महत्वाकांक्षाएं ठांढे मार रही हैं, भोग लिप्सा लपलपा रही हैं ऐसे भोगवादी समुद्र में यह प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय एक चांत द्वीप की तरह है जहॉ पवित्र आत्मा का परमपिता परमात्मा या परमेश्वर से मिलन और जीवन चक्र का रहस्य उद्घाटित होता है।

जीवन में अध्यात्म का वही महत्व है जैसे फूल में सुगंध का। ज्ञान ही मनुष्य को जानवर से पृथक भी करता है और यदि वह ज्ञान अध्यात्म सम्बन्धी हो तब तो मनुष्य–जीवन सफल ही हो जाता है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय का भी उद्देश्य और लक्ष्य मानव कल्याण और विश्व चान्ति ही है।

विश्व समाज में पापाचार ही वृद्धि का मूल कारण विद्वानों के अनुसार, सर्व चक्तिवान ईश्वर पर अनास्था ही है। ईश्वर पर विश्वास रखने वाला व्यक्ति कभी भी कोई पाप कर्म नहीं करेगा, क्योंकि वह यह मानकर चलता है कि उसके गलत कार्य को यदि कोई देख नहीं रहा तो भी सर्वज्ञ भगवान तो देख ही रहा है। वे उसे दण्डित करेंगे। यह संस्कार हमें कुकर्म से रोकता है। ईश्वरोपासना से एक लाभ यह भी है कि संकट की घड़ी में हमें परम चक्तिवान परमेश्वर की ताकत मिल जाती है जिसके बल पर हम बड़ी से बड़ी मुसीबत का भी सहास के साथ मुकाबला कर लेते हैं। नास्तिकों को यह बल प्राप्त नहीं होता। अतः उन्हें डुबाना ही है। पुनर्जन्म और भगवत अवतार का दर्शन मनुष्य को आशावादी बनाता है और सत्कर्म के लिए प्रेरित भी करता रहता है।

तत्कालीन प्रतिष्ठित जौहरी दादा लेखराज द्वारा 1936 में हैदराबाद (सिन्ध) में स्थापित प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय जिसका मुख्यालय वर्तमान में माउण्ट आबू (राजस्थान) में है और अभी 86 देशों में 6000 सेवाकेन्द्र संचालित हो रहे हैं उसकी प्रकृति भी अद्वितीय ही है। यह विश्व का एक ऐसा विश्वविद्यालय है जो आध्यात्मिक ज्ञान का ही संवर्धन करता है। एक समय मैने माडण्ट आबू के पांडव भवन में आयोजित प्रेस कान्फ्रेन्स में इस संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी से प्रश्न किया कि यह कैसा विश्वविद्यालय है जो न तो परीक्षा ही लेता है और न ही कोई उपाधि वितरण करता है? उत्सुकता एवं जिज्ञासा से भरे इस प्रश्न का उन्होंने जो उत्तर दिया। उससे न केवल मेरी चंका का पूर्णतः समाधान हो गया बल्कि वर्तमान में देश–विदेश के लाखों लोगों को अपने में जोड़कर रखने वाले इस आध्यात्मिक संस्था के बारे में और भी बहुत सी जानकारियां मिली। आदरणीय दादी प्रकाशमणि जी ने बताया कि मानव कल्याण एवं विश्व चान्ति का मार्ग ज्योतिर्मय करना भी एक विश्वविद्यालय की प्रकृति होती है। संस्था के केन्द्रों में इसके लिए ही कक्षाएं लगती हैं। ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियां विधिवत् दीक्षित होते हैं, क्या यह एक विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त करने में पर्याप्त नहीं है?

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के लम्बे नाम में ही इसकी सारी विशेङ्कताएं निहित हैं। इसकी व्याख्या कुछ इस प्रकार की जा सकती है। च्बद 'प्रजापिता ' का अर्थ उस ब्रह्मा बाबा से लिया गया है जो प्रजा पालक हैं, सृष्टि के रचयिता हैं। सम्माननीय दादी प्रकाशमणि जी से मेरा एक और प्रश्न था कि इस संस्था के नाम के साथ 'ब्रह्माकुमारी' च्बद क्यों जोड़ा गया? उन्होंने बतया कि ब्रह्मा बाबा नारी च्क्ति का उदय चाहते थे। विश्व में च्ान्ति, सुरक्षा एवं नैतिक मूल्यों की स्थापना नारी कल्याण में ही निहित है। इसीलिए इस संस्था में नारी को प्रथम सम्मानजनक स्थान दिया गया। आज देश– विदेश में अधिकांश ओम् च्ान्ति भवन ब्रह्माकुमारीयों द्वारा ही संचालित हैं, जहॉ आध्यात्मिक बनाने तथा बुरी आदतों से उसको छुटकारा दिलाने का प्रयास किया जाता है। मनुष्य में देवत्व का संचार करना ही काफी है, मनुष्य को चाहे देवता नहीं बनाया जा सकता तो उसे देव तुल्य आचरण करने के लिए तो तैयार किया ही जा सकता है। यही इस संस्था का प्रयास रहा है। राजयोग बहुत सरल है जिससे स्थायी च्ान्ति का जीवन प्राप्त किया जा सकता है।

नैतिक, मानवीय एवं आध्यात्मिक मूल्यों के जरिए मनुष्य अपनी, अपने परिवार एवं समाज की सभी समस्याओं का समाधान प्राप्त कर सकता है। इस सिद्धान्त का प्रतिपादन इस संस्था के द्वारा निरन्तर विभिन्न माध्यमों जैसे राजयोग प्रवचन, पोस्टर, प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविरों से एवं साहित्य प्रकाशनों से किया जा रहा है। यह विश्वविद्यालय एक नए समाज की आधारशिला रख रहा है। ऐसा समाज जो स्नेह, सद्भावना, माधुर्य एवं सहयोग पर आधारित हो। जिसमें प्रत्येक सदस्य तनाव मुक्त हो, युद्ध रहित विश्व समाज का निर्माण इस संस्धा का प्रमुख लक्ष्य है। एक आदर्श समाज जिसमें सभी आयु वर्ग के सदस्य स्वस्थ और खुशहाल हों। तब मिलकर यह कहा जा सकता है कि पृथ्वी पर स्वर्गलोक की कल्पना और देवी– देवताओं की तरह का व्यवहार प्राप्त करना ही इस संस्था का उध्देश्य है। जाति, धर्म, भाङ्का के आधार पर किसी से भी कोई भेदभाव न करने वाले इस सहज उपलब्ध आध्यात्मिक विश्व संस्था में उन सभी को प्रवेश प्राप्त है जो मानसिक च्ान्ति, पारिवारिक सुख एवं सामाजिक सहयोग के लिए लालायित हैं, दर– दर भटक रहे हैं और नियमित रूप से इस संस्था में पहुंचने वालों को सदस्य नहीं बल्कि विद्यार्थी ही माना जाता है, चाहें वे किसी भी उम्र के हों।

समय चक्र, कर्म विधान तथा राजयोग दर्शन का सम्यक ज्ञान देने वाले इस विश्वविद्यालय की लोकप्रियता का अन्दाज इसकी विश्वव्यापी गतिविधियों में ही परिलक्षित होता है। पिछले 20 वर्ङ्कों (1983 से 2002) में इस विश्वविधालय के तत्वावधान में 15 अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के विद्वानों ने सम्बोधित किया। जिनमें तिब्बतियों के धर्म गुरु दलाईलामा, इजिप्त के राष्ट्रपति की धर्मपत्नि मैडम अनवर सादत, तत्कालीन राष्ट्रपति स्वर्गीय ज्ञानी जैलसिंह, प्रधानमन्त्री पी. वी. नरसिम्हा राव, तत्कालीन उपराष्ट्रपति बी. डी. जत्ती, तत्कालीन उपराष्ट्रपति डॉ. आर. वेंकटरमन, राष्ट्र संघ के दो सहायक महासचिव राबर्ट मुल्लार एवं डॉ0 जेम्स जोनाह, पूर्व प्रधानमन्त्री स्वर्गीय राजीव गांधी, तात्कालिन उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवानी जी, प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी, कई केन्द्रीय मन्त्रियों, राज्य के मुख्य मन्त्रियों, उच्चतम् न्यायालय के तत्कालीन न्यायमूर्ति व्ही. आर. कृष्णा अय्यर, उच्चतम् न्यायालय के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीयश न्यायमूर्ति एम. एच. बेग एवं उच्च तथा उच्चतम् न्यायालयों के कई न्यायाधिपति, भारी संख्या में साधु– सन्त भी च्ामिल हैं। देश– विदेश में आध्यात्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की एक लम्बी सूची इस संस्था की उपलब्धियों से जुड़ी हुई है जिसे राष्ट संघ में अशासकीय संस्था के रूप में सम्मानजनक स्थान भी प्राप्त हो चुका है।

मनुष्य की कार्यक्षमता एवं सामर्थ्य में वृद्धि के लिए आध्यात्मिक चेतना जागृत करने कोई साठ वर्ङ्कों से सतत् प्रयत्नशील इस विश्वविद्यालय से अपने को जोड़े रखने में हम गौरव का अनुभव करते हैं। इस संस्था के मुख्यालय माउण्ट आबू में आयोजित राजयोग शिविर में भाग लेने का अवसर, सौभग्य से मुझे भी मिला। मैंने वहॉ सबसे आश्चर्यजनक स्थिति यह पाई कि हम शिविरार्थियों के कमरे में कोई ताला की जरूरत ही नहीं थी। मैंने यह भी महसूस किया समाज के

वे ही लोग जो इस संस्था के आयोजनों में इतने सभ्य और चालीन हो जाते हैं। चायद यह इस संस्था के पवित्र एवं देवी वातावरण का ही प्रभाव था जो मनुष्य को देवत्व प्रदान करता है।

हिन्दू धर्म समस्त देवी– देवताओं को पूज्य मानते हुए भी अपने धर्म निरपेक्ष स्वभाव की रक्षा करने वाली इस संस्था ने अपने 65 वर्ड्डों के इतिहास में कुछ उतार– चढ़ाव भी देखे। कहीं– कहीं इसे सामाजिक विरोध एवं किंचित भ्रम वश बहिष्कार का भी सामना करना पड़ा, परन्तु निरन्तर मानव कल्याण में सेवारत इस संस्था को अंततः अब विश्व मानव समुदाय में एक प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त हो चुका है।

वरीष्ठ पत्रकार, नवभारत, रायपुर
(छत्तीसगढ)

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com